आम तौर पर मुझे किसी की याद नहीं आती | बहुत रह रह कर घर की सुध लेता हूँ | माँ को इसी बात का हमेशा रोष रहा है | कहती हैं कि “ठीक हूँ” सिर्फ इतना कहने के लिए ही फोन करो, पर अपने आप नियमानुसार किया करो | माँ का ह्रदय है, मैं कहता हूँ कि रोज रोज एक ही बात कहने के लिए फोन करना? माँ मुझ से यह न होगा | पर फिर भी माँ से हार ही जाता हूँ |

जब मैं किसी को याद नहीं रखता तो कोई मुझे क्यूँ याद करे? वे कहते हैं कि उन्हें मेरी याद आती है, और मैं? कौतुहलवश पूछ बैठता हूँ कि क्यूँ? और कैसे? मेरे समक्ष दो तर्क हैं, पहला यह कि मुझ में याद करने वाला जो भाव है, वो परमेश्वर ने दिया ही नहीं है | दूसरा यह कि मुझ को मालूम ही नहीं है कि याद कहते किसको हैं | जो भी सत्य हो, अभी मैं उस से अनजान हूँ | इसी वजह से चिंता कर बैठता हूँ | उन्हें मेरी याद कैसे आ सकती है यही सोच सोच कर मैं उनको याद करता हूँ | रह रह कर यही बात याद आ जाती है कि वे मुझे याद करते हैं |

फिर सोचता हूँ कि ऐसा क्या कहा होगा मैंने जब हम पिछली बार मिले थे जो बात उनको याद रह गयी हो? क्या कोई प्रश्न पुछा था उन्होंने जिसका उत्तर देना मैं भूल गया था? या अपनी ही धुन में उनको कुछ ऐसा कह दिया हो जो उनको निरंतर कचोट रहा हो? ऐसा क्या किया होगा मैंने? कहीं कुछ पहनावे में भेद आ गया हो, कोई कमी रह गयी हो? बस यही सोच सोच कर उनके साथ हुई पूरी वार्ता मनन करता हूँ और ढूँढने की कोशिश करता हूँ वह अंश, जो उनके पास रह गया और मेरी याद बन गया |

फिर झल्ला कर अपने ही आप को हलके से सर पर हाथ मारता हूँ | थोडा श्रेय तो उनका भी बनता है, मैं ऐसा सही, वे तो अलग हैं, अच्छे हैं | शायद याद आना उनकी अच्छाई है, बस यही सोच कर संतुष्ट हो जाता हूँ, और उनसे अगली मुलाकात का इन्तेज़ार करता हूँ | और मंद मंद मुस्कुराता हूँ कि किसी बहाने ही सही, मैंने भी उनको याद किया |